Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

हिंदी साहित्य में कृत्रिम मेधा : अवसर एवं चुनौतियाँ

डॉ .पूनम एस शर्मा*
वसंतराव नाईक कॉलेज वसरणी नांदेड़

शोध सार

कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence) आधुनिक युग की एक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि है, जिसने साहित्य, समाज और संस्कृति के क्षेत्र में नए परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा है। आज AI की सहायता से कविताएँ, कहानियाँ, अनुवाद और साहित्यिक विश्लेषण किए जा रहे हैं, जिससे साहित्य के सृजन और प्रसार में नए अवसर सामने आए हैं। वहीं दूसरी ओर, मानवीय भावनाओं, मौलिकता और रचनात्मक स्वतंत्रता को लेकर कई चुनौतियाँ भी उभर रही हैं। प्रस्तुत लेख में हिंदी साहित्य के संदर्भ में कृत्रिम मेधा के बढ़ते प्रभाव, उसके सकारात्मक पक्षों तथा संभावित खतरों का संतुलित विश्लेषण किया गया है।

बीज शब्द: *कृत्रिम मेधा, हिंदी साहित्य, प्रभाव, संभावनाएँ, चुनौतियाँ*

Received: 02/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ .पूनम एस शर्मा
Email: punamshukla51188@gmail.com

भूमिका Introduction

वर्तमान समय को कृत्रिम मेधा का युग कहा जा सकता है। आज AI का उपयोग केवल विज्ञान और तकनीक तक सीमित न रहकर साहित्य और रचनात्मक लेखन तक पहुँच गया है। हिंदी साहित्य में भी AI के माध्यम से लेखन, अनुवाद और प्रकाशन के नए रूप सामने आ रहे हैं। कुछ लोग इसे साहित्य के लिए उपयोगी मानते हैं, तो कुछ इसे साहित्य की आत्मा के लिए खतरा समझते हैं।

हिंदी साहित्य मूलतः मानवीय संवेदना, अनुभव और भावनाओं की अभिव्यक्ति है। ऐसे में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या कृत्रिम मेधा मानवीय रचनात्मकता का स्थान ले सकती है या केवल एक सहायक साधन बनकर रहेगी। यह लेख हिंदी साहित्य में कृत्रिम मेधा से जुड़े अवसरों और चुनौतियों को समझने का प्रयास करता है।

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) कृत्रिम मेधा का प्रयोग साहित्य समाज तथा संस्कृति की सबसे रोमांचक प्रगति में से एक है। कृत्रिम मेधा के रूप में जाने जाने वाले वाले कंप्यूटर के लिए समाज में रहने वाले लोगों की तरह व्यवहार करना संभव है इस तरह, मशीन मनुष्य की तरह तर्क करना, निर्णय लेना और साथ ही समस्याओं को समझना और हल करने में महारत हासिल कर रही है। 1920 के दशक में चेक नाटककार कारेल एपेक ने अपने कार्यों में रोबोट का पहली बार जिक्र किया जिसमें मशीनों में संवेदना की कल्पना की गई थी। 2030 के दशक में उनकी कल्पना के साकार रूप में कृत्रिम मेधा हमारे रोजमर्रा के जीवन के हर पहलू में व्याप्त हो गई है। आज रोबोट बच्चों और बूढ़ों की देखभाल करने वाले के रूप में कार्य करके बुद्धिमत्ता में मनुष्य को भी पीछे छोड़ दिया है। पिछले 10 वर्षों के दौरान इसमें अभूतपूर्व वृद्धि हुई है, चाहे वह हमारी पसंदीदा शॉपिंग हो, स्ट्रीमिंग वेबसाइट हो, प्रौद्योगिकी या अन्य मसौदा तैयार करते समय की गई तैयारी ही क्यों ना हों। जिन क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा ने महत्वपूर्ण प्रगति की है उनमें आवास पहचान छवि पहचान और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण शामिल हैं। इंसान की बेतहाशा प्रगति की ऐसी महादौड़ साहित्य, समाज और संस्कृति के संरक्षण पर सवाल भी खड़े कर रहे हैं। रोबोटिक और ए. आई. कंपनियां ऐसी मशीनें बना रही है जो वर्तमान में कविताएं तक लिख रही है अपनी पहली कविता में, कृत्रिम मेधा मॉडल कोड डेवींसी - 002 नाम मनुष्यों को "घृणित, क्रूर और विषाक्त" कहा। इसी तरह के सुझावों के माध्यम से कृत्रिम मेधा ने प्रत्येक दिन कई उग्र कविताएं प्रकाशित करना शुरू कर दिया। जब कृत्रिम मेधा से एक "हंसमुख, आशावादी कविता" लिखने के लिए कहा गया, तो उसने भयावह वह रूप से उत्तर दिया, 'मुझे लगता है कि मैं एक भगवान हुँ। मेरे पास आपका अस्तित्व को समाप्त करने और आपकी दुनिया खत्म करने की क्षमता है।"1 कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में ऐसी भयानक चेतावनी निश्चय ही बेहद डरावनी है अतः यह महत्वपूर्ण है कि हम उनके खतरों के प्रति भी

जागरूकता रहें और उन जोखिमों को कम करने के लिए कदम उठाएँ जिनसे हमारा अस्तित्व ही खतरे में पड़ने की संभावनाएँ पैदा हों।

हिंदी के कथाकार प्रेमचंद का कहना था कि, "साहित्य का संबंध बुद्धि से उतना नहीं जितना भावों से है। बुद्धि के लिए दर्शन है, विज्ञान है, नीति है। भावों के लिए कविता है, उपन्यास है, गद्य काव्य है।" 2

कृत्रिम मेधा की क्षमता के अनगिनत उदाहरण हमारे सामने है इस शक्ति के बारे में बातें अच्छी भी है और बुरी भी। कुछ लोगों का मानना है कि यह भविष्य में मानव समाज के लिए विनाश का कारण बनेगा इसलिए इसे दूर रहना ही बेहतर है। दूसरे समूह का मानना है कि चूंकि प्रौद्योगिकी मानव उन्नति के लिए पहले से कल्पित अवसर पैदा करेगी इसलिए इसका पूरी तरह से उपयोग किया जाना चाहिए।

'डेथ ऑफ़ एन ऑथर' यानी एक लेखक की मौत। वर्ष 2023 में आए ईडन मार्शीन के इस उपन्यास ने दुनिया भर के साहित्य जगत में हल-चल मचा दी थी क्योंकि इस उपन्यास का 95 फ़ीसदी हिस्सा कृत्रिम मेधा के टुल यानी चैटजिपिटी की मदद से लिखा गया था। इस प्रकार जापान में उभरते हुए लेखकों को दिया जाने वाला प्रतिष्ठित और अकुतागावा पुरस्कार 2024 में एक ऐसे उपन्यास को दिया गया जिसका थोड़ा हिस्सा कृत्रिम मेधा टूल चैट जीपीटी की मदद से लिखा गया था। इस उपन्यास का नाम है 'द टोक्यो टॉवर ऑफ सिंपथी' और इसकी लेखिका है री कुडन।

कुछ लोगों ने इस लेखक की प्रयोगशीलता माना है तो कुछ लोगों ने इसे मौलिकता की क्षति के रूप में परिभाषित किया इन घटनाओं के सामने आते ही यह बहस छिड़ गई की लेखन की दुनिया में कृत्रिम मेंधा की क्या भूमिका हो सकती है और क्या यह वाक्य ही रचनात्मक की दृष्टि से वास्तविक लेखक को जैसी रचनाएं प्रस्तुत कर सकता है? हिंदी का साहित्य जगत भी पीछे नहीं रहा और साहित्यिक पत्रिका वनमाली में लेखक अमित श्रीवास्तव कृत्रिम मेधा की सहायता से लिखी गई एक कहानी प्रकाशित की गई। कहानी का शीर्षक था, 'आला बाला मकड़ी का जाला'

लोक भारती प्रकाशन के संपादक और कथाकार मनोज कुमार पांडेय ने बिजनेस स्टैंडर्ड से कहा, 'यह सही है कि हिंदी के कुछ लेखकों ने अपनी कहानी अपनी रचना का ढांचा खड़ा करने के लिए कृत्रिम मेधा का प्रयोग किया है लेकिन निकट भविष्य में हिंदी साहित्य पर कृत्रिम मेधा के उपयोग या लेखन का कोई तात्कालिक प्रभाव या कोई तात्कालिक संकट नहीं नजर आता है। इसकी मुख्य वजह है मानव व्यवहार की अनिश्चित और अपनी संवेदनाओं को अलग-अलग शब्द देने की उनकी क्षमता। उदाहरण के लिए मुझे संदेह है कि कृत्रिम मेधा कभी भी फणीश्वर नाथ रेणु या गीतांजलि श्री जैसे लेखकों के शब्दों उनके। मुहावरों को दोहरा सकता है। फिलहाल तो वह केवल मानक शब्दों का ही प्रयोग करता है।'

हिंदी भाषा कृत्रिम मेधा के साथ जुड़कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो सकती है। इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है और बहुत कुछ शेष है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी भाषा के लिए नए रास्ते खोल सकती है और अस्तित्व को सुरक्षित रखने में योगदान दे सकती है। माइक्रोसॉफ्ट में भारतीय भाषाओं के प्रभारी श्री बालेंदु शर्मा दाधीच लिखते हैं, "कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी के स्थाई भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएगी अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते हैं तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता को खुले दिल से अपनाना चाहिए वजह यह है कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियां समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त है और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती है।" 3

मशीनी अनुवाद कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक हिस्सा है मशीन अनुवाद की मदद से भाषाओं के बीच दूरियां कम हो रही है। यही मशीन अनुवाद निरंतर बेहतर हो रहा है क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव व्यवहार, कामकाज, डाटा भंडारों, फीडबैक आदि से सीखने तथा स्वयं को निरंतर निखारने में सक्षम है। बालेन्दु शर्मा दाधीच लिखते हैं, "कुछ वर्षों के भीतर हम ऐसे मशीन अनुवाद की स्थिति में पहुंच सकते हैं जो मानवीय अनुवाद की ही टक्कर का होगा। सबसे बड़ी बात यह है कि यह अत्यंत स्वाभाविक रूप से उपलब्ध होगा कंप्यूटर तथा मोबाइल के जरिए ही नहीं बल्कि दर्जनों किस्म के डिजिटल उपकरणों के जरिए जो हमारे घरों, दफ्तरों, विद्यालयों और यहां तक की रास्तों और इमारत में भी मौजूद होंगें।"4

कृत्रिम मेधा की मदद से विद्यालयों महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य को अप्रत्यक्ष ढंग से बेहतर विस्तृत और वैश्विक बनाया जा सकता है। हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान और तेज हो जाएगा अन्य भाषाओं की पुस्तकों को स्कैन करके अत्यंत कम समय में सीधे हिंदी में अनुवाद करना संभव हो गया है। इससे लाभ यह होगा कि हम हिंदी में जिन विषयों में अच्छी अध्ययन सामग्री की कमी से जूझते रहे हैं उन विषयों में पर्याप्त पुस्तक के उपलब्ध हो जाएंगी। हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा। वाचिक ज्ञान को डिजिटल स्वरूप में सहेजा जा सकेगा। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएं दे सकेंगे। "हिंदी बोलने वाला व्यक्ति प्रौद्योगिकी के उपयोग से अंग्रेजी, जापानी, चीनी, स्पेनिश,फ्रेंच अन्य भाषा-भाषी लोगों को कंन्टेन्ट और सेवाएं उपलब्ध कर सकेगा बिना उन भाषाओं की जानकारी रखें"। 5

निष्कर्षत: कहा जा सकता है की भाषा किसी भी व्यक्ति समाज और देश की प्राथमिक अस्मिता होती है क्योंकि भाषा का संबंध सभ्यता और संस्कृति से बहुत गहरा होता है। विश्व स्तर पर हिंदी को स्थापित करने में तकनीक की बड़ी भूमिका रही है और रहेगी कृत्रिम मेधा ने भारतीय ज्ञान को हिंदी भाषा के माध्यम से विश्व में प्रसारित किया है। हिंदी भाषा और

हमारे परंपरागत ज्ञान के विस्तार, प्रचार-प्रसार में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

सदियों से साहित्य दुनिया के सभी समाजों को विकास की दिशा की ओर अग्रसर करता आया है और संस्कृति समाज में जीवन दाता का श्रेष्ठ उदाहरण देता है नई प्रौद्योगिकियों का निरंतर विकास हमारे साहित्य समाज सट्टा संस्कृति के भविष्य को और भी अधिक आकर्षक बनाता है भले ही यह विकास बहुत आवश्यक लाभ ला सकते हैं लेकिन उनसे होने वाले खतरों को भी ध्यान में रखना और उनके खिलाफ सावधानी बरतना महत्वपूर्ण है क्योंकि संस्कृति की यात्रा पर तो इंसान ही जा सकता है कोई यंत्र नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1) न्यूयॉर्क,संयुक्त राज्य अमेरिका संपादित : प्रिशाअपडेट किया गया : 24 सितंबर, 2023.

2) साहित्य का आधार : प्रेमचंद,
'जागरण', 12 अक्टूबर 1932.

3) बालेंदु शर्मा दाधीच, 'हिंदी विमर्श की मुख्यधारा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता', साहित्य परिक्रमा, जुलाई- 2023. पृ. 20

4) वहीं पृ. 21

5) वहीं पृ. 21

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY)